नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

नारी शक्ति वंदन : संकल्प से सशक्तिकरण की पहल

मध्यप्रदेश सरकार द्वारा महिला सुरक्षा और सशक्तिकरण को लेकर हाल ही में लिए गए निर्णय न केवल प्रशासनिक सक्रियता को दर्शाते हैं, बल्कि एक व्यापक सामाजिक दृष्टिकोण का संकेत भी देते हैं. 10 से 25 अप्रैल तक 'नारी शक्ति वंदन पखवाड़ा' का आयोजन और महिला योजनाओं के लिए 240.42 करोड़ रुपए की स्वीकृति इस दिशा में एक ठोस कदम है. खासतौर पर आठ नए वन स्टॉप सेंटर की स्थापना का निर्णय, महिलाओं को त्वरित और समेकित सहायता उपलब्ध कराने की दिशा में अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाना चाहिए.

आज भी समाज में अनेक महिलाएं घरेलू हिंसा, उत्पीड़न, आर्थिक निर्भरता और सामाजिक दबाव जैसी समस्याओं से जूझ रही हैं. ऐसे में वन स्टॉप सेंटर जैसी व्यवस्था, जहां एक ही स्थान पर मेडिकल, कानूनी, काउंसलिंग और पुलिस सहायता मिल सके, उनके लिए एक मजबूत सहारा बन सकती है. मैहर, मऊगंज, पांढुर्णा, मनावर, पीथमपुर, लसूड़िया, सांवेर और पेटलावद जैसे क्षेत्रों में इन केंद्रों की स्थापना यह भी दर्शाती है कि सरकार अब छोटे शहरों और अर्ध-शहरी इलाकों तक सुविधाएं पहुंचाने पर ध्यान दे रही है, जो लंबे समय से उपेक्षित रहे हैं.

हालांकि, केवल योजनाओं की घोषणा और बजट आवंटन ही पर्याप्त नहीं होते. इन योजनाओं का वास्तविक प्रभाव उनके क्रियान्वयन पर निर्भर करता है. अक्सर देखा गया है कि कई सरकारी योजनाएं जमीनी स्तर पर अपेक्षित परिणाम नहीं दे पातीं, जिसका मुख्य कारण संसाधनों की कमी, प्रशिक्षित कर्मचारियों का अभाव और निगरानी तंत्र की कमजोरी होता है. इसलिए यह आवश्यक है कि वन स्टॉप सेंटर केवल कागजों तक सीमित न रहें, बल्कि वहां प्रशिक्षित स्टाफ, संवेदनशील पुलिस व्यवस्था और प्रभावी समन्वय सुनिश्चित किया जाए. 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' और महिला हेल्पलाइन-181 जैसी योजनाओं के लिए भी बजट का प्रावधान किया गया है, जो यह दर्शाता है कि सरकार बहु-आयामी दृष्टिकोण अपनाने का प्रयास कर रही है. लेकिन इन योजनाओं की सफलता के लिए जनजागरूकता भी उतनी ही जरूरी है. जब तक महिलाएं अपने अधिकारों और उपलब्ध सुविधाओं के प्रति जागरूक नहीं होंगी, तब तक इन योजनाओं का पूरा लाभ समाज तक नहीं पहुंच पाएगा.

'नारी शक्ति वंदन पखवाड़ा' जैसे आयोजनों का उद्देश्य केवल प्रतीकात्मक नहीं होना चाहिए. यह समय आत्ममंथन का भी है,यह समझने का कि महिलाओं की वास्तविक स्थिति क्या है और किन क्षेत्रों में अभी और काम किए जाने की जरूरत है. यदि यह पखवाड़ा केवल औपचारिक कार्यक्रमों तक सीमित रह गया, तो इसका प्रभाव सीमित ही रहेगा. इसके बजाय इसे संवाद, जागरूकता और ठोस कार्रवाई का मंच बनाया जाना चाहिए. कुल मिलाकर महिला सशक्तिकरण केवल सरकारी योजनाओं का विषय नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया है. सरकार की पहल सराहनीय है, लेकिन समाज की मानसिकता में बदलाव के बिना यह अधूरा रहेगा. जब तक महिलाओं को समान अवसर, सम्मान और सुरक्षा नहीं मिलती, तब तक सशक्तिकरण का लक्ष्य अधूरा ही रहेगा. मध्यप्रदेश सरकार के ये कदम एक सकारात्मक शुरुआत हैं, अब जरूरत है इन्हें प्रभावी क्रियान्वयन और सामाजिक सहयोग के साथ आगे बढ़ाने की.

आखिरकार सुनी गई आधी आबादी की आवाज

आर. विमला, आईएएस

> प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी का विकसित भारत (2047 तक एक विकसित भारत) का दृष्टिकोण इस दृढ़ विश्वास पर आधारित है कि कोई भी राष्ट्र अपनी पूरी क्षमता तक तब तक नहीं पहुँच सकता, जब तक उसके आधे नागरिक उन जगहों से बाहर रहें जहाँ सत्ता का संचालन होता है .जैसा कि उन्होंने हमेशा कहा है-भारत तभी एक विकसित राष्ट्र बनेगा जब इसकी महिलाएँ न केवल अपने घरों में, बल्कि अपनी संसद में भी पूरी तरह सशक्त होंगी. नारी शक्ति वंदन अधिनियम भारतीय महिलाओं के लिए कुछ नया सृजन नहीं करता है .इसने उस विद्वत्ता, साहस और नेतृत्व करने की इच्छाशक्ति के लिए एक संस्थागत स्थान सुनिश्चित कर दिया है, जो महिलाओं में पहले से ही मौजूद है. शौचालय की गरिमा से लेकर संसद में समान आवाज़ तक, यह मात्र एक विधायी यात्रा नहीं है. यह एक ऐसे राष्ट्र की कहानी है जिसने अंतत: पूर्णता की ओर बढ़ने का निर्णय लिया है.

नारी शक्ति वंदन अधिनियम और भारतीय लोकतंत्र में महिलाओं का न्यायोचितस्थान जब महिलाएँ सशक्त होती हैं, तो भारत मजबूत होता है. घर की गरिमा से लेकर संसद में समान आवाज़ तक, यह एक नए और आत्मविश्वास से भरे भारत की परिकल्पना है.— प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी

भारत की महिलाएँ सदैव महान कार्यों में सक्षम रही हैं. वैदिक काल में गार्गी और मैत्रेयी ने बड़े-बड़े दार्शनिकों को निरुत्तर कर दिया था. पुण्यश्लोक अहिल्यादेवी होल्कर ने जिस न्यायपूर्ण तरीके से अपने राज्य का शासन चलाया, उसकी बराबरी उनके समकालीन शासक नहीं कर सके. रानी लक्ष्मीबाई साहस की एक अमर मिसाल बन गईं. फिर भी, स्वतंत्र भारत—जो समानता के सिद्धांत पर आधारित एक संवैधानिक गणराज्य है ने इन महान महिलाओं की उत्तराधिकारियों को अपनी विधायिकाओं में शायद ही कोई जगह दी. पहली लोकसभा में महिला सदस्यों की संख्या मात्र 4.4प्रतिशतथी. सात दशक बाद, 17वीं लोकसभा में भी यह आंकड़ा बढ़कर केवल 14.4प्रतिशत तक ही पहुँच पाया. व्यक्तिगत प्रतिभा ने तो अपनी जगह बना ली थी, लेकिन व्यवस्थागत बदलाव अभी भी नहीं आया था. असल में, महिलाएं अपने ही लोकतंत्र में एक तरह से मेहमान बनकर ही रह गईं.

हमारे संविधान ने पहले ही दिन से यह स्वीकार किया था कि जब सदियों से ढांचागत विसंगतियां जड़ जमाए बैठी हों, तो केवल औपचारिक समानता पर्याप्त नहीं होती. संरक्षणात्मक भेदभाव के सिद्धांत के तहत अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों और बाद में पंचायती राज व्यवस्था में महिलाओं के लिए सीटें आरक्षित की गईं. इस बात में कोई संदेह नहीं है कि पंचायतों में आरक्षण की व्यवस्था सफल रही है- 24 मार्च 2026 तक, निर्वाचित पंचायत प्रतिनिधियों में से लगभग 49.75प्रतिशतमहिलाएँ हैं. जिन जगहों पर महिलाएँ शासन करती हैं, वहाँ पानी की आपूर्ति सुचारू होती है, साफ़-सफ़ाई की स्थिति बेहतर होती है और लड़कियाँ स्कूल जाना जारी रखती हैं. इसके बावजूद, संसद में भी इसी सिद्धांत को लागू करने के उद्देश्य से जो विधेयक पेश किए गए थे, वे राजनीतिक इच्छाशक्ति के अभाव में दशकों तक बार-बार निष्प्रभावी होते रहे.वह क्षण जिसने सब कुछ बदल दिया - वह अधूरी कड़ी 19 सितंबर 2023 को पूरी हुई. भारत के नए संसद भवन में आयोजित कामकाज के पहले ही सत्र में, नारी शक्ति वंदन अधिनियम को संसद के दोनों सदनों में, प्रत्येक राजनीतिक दल के सर्वसम्मत समर्थन से पारित किया गया. हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने विधेयक पेश करते हुए दोनों सदनों को बताया-यह कानून केवल एक कानून नहीं है, बल्कि यह प्रत्येक भारतीय महिला की शक्ति, त्याग और सामर्थ्य के प्रति एक श्रद्धांजलि है.

यह अधिनियम लोकसभा और राज्यों की विधानसभाओं में महिलाओं के लिए एक-तिहाई सीटें आरक्षित करता है, जिसमें अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति की महिलाओं के लिए उप-कोटा भी शामिल है. नए संसद भवन का यह पहला अधिनियम होना अपने आप में एक घोषणा थी- अमृत काल के लोकतंत्र की संरचना पूरे भारत के लिए और सभी की भागीदारी के साथ निर्मित की जाएगी. इस अधिनियम में बदलाव लाने की अपार क्षमता है, क्योंकि इसके लागू होने से संसद में महिला सदस्यों की संख्या में भारी वृद्धि होगी. महिला विधायक निरंतर स्वास्थ्य, पोषण, शिक्षा और सुरक्षा को प्राथमिकता देती हैं—ये वही क्षेत्र हैं, जहाँ भारत में लैंगिक असमानता सबसे अधिक है. एक ऐसी संसद, जिसमें एक-तिहाई सदस्य महिलाएँ होंगी, वह अलग तरह के प्रश्न पूछेगी और अलग तरह के विचार सुनेगी. इससे भारतीय लोकतंत्र की गुणवत्ता में सुधार होगा, न कि केवल उसकी बाहरी छवि में.

हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने हमेशा यह समझा है कि जमीनी स्तर पर सशक्तिकरण के बिना राजनीतिक सशक्तिकरण खोखला होता है. उनके द्वारा शुरू की गई यह यात्रा अत्यंत बुनियादी गरिमा से लेकर सर्वोच्च लोकतांत्रिक भागीदारी तक एक सुविचारित पथ पर आगे बढ़ती है.

(लेखिका महाराष्ट्र सरकार मेरे जिडेंट कमिश्नर एवं सचिव पद पर कार्यरत हैं और आईआईटी बॉम्बे सेपी एचडी कर रही हैं.)

मालवा- निमाड़ की डायरी

सज्जन ने अचानक क्यों ठोकी दावेदारी?

संजय व्यास

अपने नाथ कमलनाथ की राज्य में पुन: सक्रियता बढऩे और उन्हें दिल्ली दरबार में फिर से मिल रही तवज्जो के साथ इंदौरी नेता पूर्व मंत्री व सांसद सज्जन सिंह वर्मा की महत्वाकांक्षा फिर हिलोरे ले रही है. आगामी राज्य सभा चुनाव को लेकर कांग्रेस में चल रहे नामों में एक पखवाड़े पूर्व तक कमलनाथ भी शामिल थे. लगता है नई पीढ़ी को आगे करने की राहुल गांधी की मंशा को देख उन्होंने खुद अपने को बाहर कर लिया है. इसके बाद ही कमलनाथ के संकेत पर सज्जन सिंह वर्मा ने राज्य सभा चुनाव गंभीरता से लेते हुए खुलेआम अपनी दावेदारी ठोंक दी है. मालवा-निमाड़ से पहले ही कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष जीतू पटवारी और पूर्व प्रदेशाध्यक्ष अरुण यादव का नाम राज्य सभा टिकट की रेस में था.

हालांकि जीतू पटवारी ने बाद में चुनाव न लडऩे की बात कही है, पर अरुण यादव पूर्ण तौर पर टिकट के लिए लाबिंग में लगे हैं. अब सज्जन की दावेदारी से उनके सामने परेशानी खड़ी हो गई है. वे पिछड़े वर्ग से आते हैं और वर्मा दलित वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं. अगर पार्टी आलाकमान राज्य सभा चुनाव में पिछड़े या दलित वर्ग से टिकट देने की कवायद करता है तो देखना होगा किसका पलड़ा भारी पड़ता है- अरुण यादव या फिर सज्जन सिंह वर्मा. वैसे प्रदेश में इन वर्गों से और भी जगह दावेदार लाबिंग में जुटे हुए हैं. सज्जन सिंह वर्मा सोनकच्छ विधानसभा से पांच बार विधायक रह चुके हैं. इसके अलावा साल 2009 में उन्होंने देवास से लोकसभा का चुनाव भी जीता था. इसके बाद कांग्रेस पार्टी ने साल 2023 में उन्होंने सोनकच्छ से विधायकी का चुनाव लड़वाया था, लेकिन वह भाजपा के राजेश सोनकर से हार गए थे.

विवादित बयान और अशालीन कृत्य पर घिरे कुणाल

शाजपुर के कालापीपल से पूर्व विधायक व कांग्रेस के राष्ट्रीय सचिव कुणाल चौधरी विवादित बयानों और अशालीन कृत्य से भाजपा के निशाने पर आ गए हैं. विगत दिनों किसानों के समर्थन में शाजापुर जिला मुख्यालय स्थित कलेक्टर कार्यालय के सामने कांग्रेस द्वारा धरना प्रदर्शन आयोजित किया गया था. धरने का प्रमुख मुद्दा गेहूं खरीदी में देरी, अव्यवस्था और प्राकृतिक आपदाओं से प्रभावित किसानों को मुआवजा न मिलना रहा. धरने को संबोधित करते हुए कुणाल चौधरी आपा खो बैठे भाजपा सरकार पर निशाना साधते-साधते केंद्र सरकार में कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान पर अशोभनीय विवादित टिप्पणी कर दी.

इसके बाद ज्ञापन देने के लिए जब कांग्रेसी कलेक्टर कार्यालय में खड़े थे, तो ज्ञापन की कॉपी में देरी होने से शाजापुर एसडीएम मनीषा वास्कले के सामने उन्होंने गेहूं की बोरी को ही ज्ञापन के रूप में उड़ेल दिया. तो वहीं कुछ कांग्रेसी कार्यकर्ताओं ने इस ढेर में से महिला अधिकारी पर गेहूं फैंक दिए. अब भाजपा ने शिवराज पर अशोभनीय टिप्पणी और महिला अधिकारी के अपमान को मुद्दा बना लिया है और उन पर हमलावर है.

निमाड़ में कांग्रेस का खोता जनाधार

पश्चिमी-पूर्वी निमाड़ के अंतर्गत आने वाले खण्डवा, बुरहानपुर, खरगौन, बड़वाह, सेंधवा, बड़वानी में एक समय कांग्रेस की अच्छी पैठ थी. शनै-शनै वह यहां अपना जनाधार खोती जा रही है. खंडवा विधान सभा वह 1990 से नहीं जीत पाई है. बुरहानपुर में खोना-पाना लगा रहा. खरगोन में भी ऐसा ही चला, लेकिन खंडवा व बड़वानी जिले की अन्य विधान सभाओं में कांग्रेस- भाजपा में कांटे की टक्कर होती रही. अब यहां भी कांग्रेस के जनाधार में लगातार सेंध वग रही है. बड़वानी में पूर्व गृहमंत्री बाला बच्चन को पानसेमल के भाजपा विधायक श्याम बर्डे ने काफी क्षति पहुंचाई. उनके ग्रामीण इलाकों के अनेक कार्यकर्ता-नेता गत कुछ समय में बर्डे के प्रयासों से भाजपा में चले गए. अब खंडवा जिले में भी पंधाना से भाजपा विधायक छाया मोरे कांग्रेस के कद्दावर नेता राजनारायण सिंह पुरनी परिवार की जड़ें खोखली करने में लगी हैं. पुरनी परिवार का पंधना, मंधाता व आसपास के क्षेत्र में अच्छा होल्ड रहा है. कुछ दिनों पूर्व ही छाया मोरे ने उनके क्षेत्र में सेंध लगाते हुए कई स्थापित कांग्रेस नेताओं को भाजपा में शामिल करा लिया. यह पुरनी परिवार राजनीति के लिए अच्छा संकेत नहीं होना बताया जा रहा है.

मताधिकार से वंचित लाखों लोगों की व्यथा

इस बार बंगाल विधानसभा चुनाव में लाखों मतदाताओं को वोट डालने से वंचित रहना पड़ेगा. इससे वहां के चुनाव परिणाम प्रभावित होंगे, क्योंकि कितनी ही सीटों पर कुछ हजार वोट के अंतर से जीत-हार तय होती है. विधानसभा चुनाव से ठीक पहले घनी आबादी वाले इस राज्य में मतदाता सूची का विशेष गहन पुनरीक्षण किया गया. सुप्रीम कोर्ट ने भी वोटर लिस्ट में मतदाताओं के नाम शामिल करने की अपील पर निर्णय लेने में समय की कमी का हवाला देते हुए चुनाव आयोग को रियायत दे दी. लाखों लोग अपने मताधिकार से वंचित रहते हैं, तो इसका जिम्मेदार चुनाव आयोग है. इस स्थिति का लाभ केंद्र में सत्तारूढ़ पार्टी बीजेपी को मिल सकता है, जो बंगाल में जीतने का सपना देख रही है. पिछले 3 वर्षों में चुनाव आयोग पर बीजेपी का नियंत्रण मजबूत हुआ है. 2023 में सुप्रीम कोर्ट के निर्णय में कहा गया था कि प्रधानमंत्री, सीजेआई व लोकसभा में नेता विपक्ष का पैनल चुनाव आयुक्त की नियुक्ति करेगा. केंद्र सरकार ने कुछ ही महीनों में कानून बनाकर इस निर्णय को निष्प्रभावी कर दिया. सरकार ने तय किया कि सीजेआई को पैनल में न रखकर उसमें प्रधानमंत्री, एक कैबिनेट मंत्री व विपक्ष का नेता शामिल होंगे. इस तरह पैनल में सरकार ने अपनी स्थायी मेजॉरिटी बना ली. उस कानून में यह भी प्रावधान किया गया कि चुनाव आयुक्त को पद पर रहते हुए किए गए अपने कार्यों के लिए आजीवन मुकदमा नहीं चलाया जा सकेगा. इस अधिनियम के प्रावधानों को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी गई, लेकिन मामला अभी तक विचार के लिए नहीं लिया गया. 2024 में सरकार ने चुनाव संचालन कानून 1961 के नियम 93 में संशोधन किया जिसमें चुनाव संबंधी जानकारी सार्वजनिक रूप से हासिल करने पर रोक लग गई. जिन राज्यों में विपक्षी पार्टियों की सरकार थी, वहां एसआईआर कराया गया ताकि बड़ी तादाद में नाम काटे जा सकें. जब इस प्रक्रिया में धांधली को लेकर विपक्ष ने सीईसी के खिलाफ महाभियोग प्रस्ताव लाया तो लोकसभा अध्यक्ष व राज्यसभा के सभापति ने ठुकरा दिया. वैसे भी सरकार के बहुमत के सामने यह प्रस्ताव गिरना ही था. मतदाता सूची से नाम गायब होने से नाराज लोगों ने गत सप्ताह मालदा में 7 न्यायिक अधिकारियों का घेराव किया. यह स्थिति जनता में व्याप्त अविश्वास को दर्शाती है.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

जूता बनता जी का जंजाल चप्पल पहन रहो खुशहाल

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, सभी जानते हैं कि मंदिर और रसोईघर में जूता पहनकर जाना वर्जित है परंतु जम्मू-कश्मीर में एक मंदिर के इंचार्ज आईएएस अधिकारी ने मंदिर के परिसर में भेंटवस्तुओं की एक दुकान के वास्तु पूजन के समय जूता उतारने के प्रति अनिच्छा जाहिर की. अपनी 11 वर्ष की सेवा के बावजूद वह भारतीय संस्कृति व परंपरा को नहीं समझ पाया. आखिर उसे बाहर ही रुकना पड़ा.'

हमने कहा, 'किसी भी धर्मस्थल में प्रवेश के पहले जूता-चप्पल-सैंडिल बाहर ही उतार देना पड़ता है. वर्ल्ड बैंक के तत्कालीन अध्यक्ष पॉल वुल्फविट्ज को 2007 में तथा ब्रिटेन के किंग चार्ल्स को 2023 में मस्जिद में प्रवेश के समय बाहर जूते उतारने पड़े थे. तब चार्ल्स के फटे, छेदवाले मोजे नजर आए थे. इंटरनेशनल फ्लाइट से जाते समय एयरपोर्ट अथॉरिटी जूते उतारने को कहते हैं. तत्कालीन राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम भी जब अमेरिका जा रहे थे तब एयरपोर्ट पर उन्हें जूते-मोजे उतारने पड़े थे. सुरक्षा प्रोटोकाल के तहत ऐसा होता है.'

हमने कहा, 'यदि आप किसी कार्यक्रम में अध्यक्ष या मुख्य अतिथि बनकर गए तो वहां सरस्वती के चित्र के सम्मुख दीप प्रज्वलन करने से पहले जूते उतार देने पड़ते हैं. कनाडा के प्रधानमंत्री जब अमृतसर के स्वर्णमंदिर गए थे तो उन्होंने भी जूते उतार दिए थे. विदेश में किसी ऐतिहासिक स्मारक स्थल, मान्यूमेंट में जाने पर वहां जूते बाहर उतारकर कपड़े के स्लीपर पहन कर भीतर प्रवेश मिलता है.'

पड़ोसी ने कहा, 'तब तो ऐसी जगह फीतेवाला जूता पहनकर जाना टालना चाहिए. चप्पल या स्लिपऑन शू झट से बाहर निकालना सुविधाजनक रहता है. जूते से हमें याद आया कि चुनाव के समय पार्टियों में जूतमपैजार होती है. जज को भी सतर्क रहना पड़ता है कि कोई सिरफिरा सख्त सजा सुनाए जाने पर चिढ़कर उनकी ओर जूता न फेंक दे. सभाओं में उपद्रवी लोग स्टेज पर पुराने जूते-चप्पल फेंकते आए हैं. सर्वेश्वर दयाल सक्सेना ने कविता लिखी थी- इब्नबतूता पहन के जूता निकल पड़े बाजार में! एक जमाने में विदेशी कंपनी डॉसन का जूता मशहूर था. तब अकबर इलाहाबादी ने शेर लिखा था- डॉसन ने जूता बनाया, मैंने एक मजमूं लिखा, मेरा मजमूं पिट गया, डॉसन का जूता चल गया!'

हमने कहा, 'जो लोग किसी मंदिर में दर्शन करने जाते हैं, उनका ध्यान भगवान पर नहीं, बाहर उतारे अपने कीमती जूतों पर लगा रहता है.'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12229

- डॉ. सागर खादीवाला

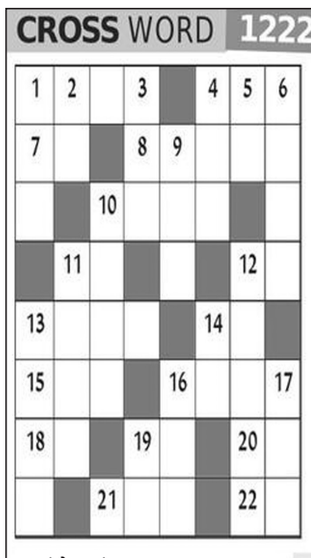

ऊपर से नीचे

1. निष्पक्ष, जिसके साथी-समर्थक न हों 2. झगड़ा, तकरार 3. निगलना, गले से नीचे पेट में उतारना 4. सड़ने की क्रिया या भाव 5. स्त्री जाति का प्राणी या जीव 6. गायब (उर्दू) 9. बूंद (उर्दू) 10. ताईद, अनुपोषण, पुष्टि करने की क्रिया 11. काम, हुनर, करामात 12. मल्ल 13. प्रार्थना, नम्रतापूर्वक कुछ कहना, विनती 14. वह शब्द या वाक्य जो किसी अनिष्ट की कामना से कहा जाए 16. न मरने वाला, चिरंजीवी 17. एक सदाबहार वृक्ष, डग, 19. क्लेश, तकलीफ, कष्ट

बाएं से दाएं

1. राजस्थान का एक पहाड़ 4. बराबर 7. पंख, लेकिन 8. परदादा से बड़ा दादा 10. अनादिकाल, बहुत दिन से चली आई परंपरा 11. अल्प, थोड़ा 12. पैर, ओहदा 13. व्यर्थ, निष्प्रयोजन 14. बादशाह, मुसलमान फकीर 15. तनख्वाह 16. निर्निमेष, एकटक 18. किसी की अपेक्षा कम या घटिया, दबाव 19. पूंछ, पूंछ जैसी कोई वस्तु या पीछे लगा कोई व्यक्ति 20. बहस, विवाद, मुकदमा 21. तालाब 22. गीला, आर्द्र

Solution 12228

मि	च	का	ना		क	ल	श
मि	न	क	ना		ड़ा		ब
या	क			प्र	का	श	न
ना	ना	त्म	वा	दी		य	म
			द	प	ट	ना	
अ	स्वा	भा	वि	क		गा	ल
ध		त	वा		त	र	ह
र	ति		द	ह	न		र

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में शिक्षा प्रतियोगिता में सफलता मिलेगी. यात्रामें बैचारिक वाद विवाद होगा. धार्मिक कार्यो में रूचि रहेगी. वर्ष के मध्य में मित्रों तथा भाईयों का सहयोग, अचल संपत्ति के कार्यो में सफ्लता मिलेगी. दाम्पत्य जीवन में मधुरता रहेगी. कार्यक्षेत्र में व1द्धि होगी. कर्मचारियों का सहयोग बना रहेगा. वर्ष के अन्त में पारिवारिक समस्याओं में व्यस्तता रहेगी.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को भाईयों और मित्रों का कार्यो में सहयोग बना रहेगा. अचल संपत्ति से लाभ होगा. दाम्पत्य जीवन में मधुरता आयेगी. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को यात्रा में सावधानी रखकर कार्य करना हितकर रहेगां. कर्क राशि के व्यक्तियों को शारीरिक कष्ट रह सकता है. सिंह राशि के व्यक्तियों को सफ्लता मिलेगी. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को अच्छा स्थान, पद प्राप्त होगा. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को कार्यक्षेत्र में परिश्रम बढेगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक गंभीर एवं स्वाभिमानी, निर्णय लेने की अच्छी क्षमता रहेगी. समाज में स्थान बनायेगा, नौकरी में अच्छी सफ्लता मिलेगी, माता पिता के प्रति श्रद्धा रहेगी.

उदयकालीन ग्रह चाल

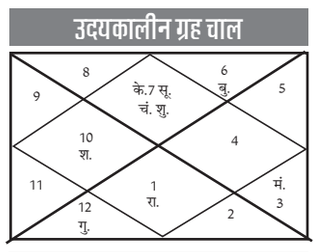

पंचांग

रा.मि. 25 संवत् 2083 वैशाख कृष्ण त्रयोदशी बुधवासरे रात 8/12, पूर्वाभाद्रपद नक्षत्रे दिन 1/6, ब्रह्म योगे दिन 11/22, गर करणे सू.उ. 5/42, सू.अ. 6/18, चन्द्रचार कुम्भ, दिन 7/6 से मीन, पर्व- प्रदोष व्रत, शु.रा. 12,2,3,6,7,10 अ.रा. 1,4,5,8,9,11 शुभांक- 5,7,1.

व्यापार भविष्य

वैशाख कृष्ण त्रयोदशी को पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के प्रभाव से चांदी गुड, खांड, चीनी, शेयर मार्केट में मंदी की चाल चलेगी, गेहूँ, जौ, चना, तिल, तेल, सरसों, उड़द के भाव में समता रहेगी, नरमी का रूख चल सकता है. भाग्यांक 1589 है.

मेष- कार्य क्षेत्र में संपर्कों का लाभ मिलेगा, रचनात्मक कार्यों में उत्साह रहेगा, शुभ संदेश प्राप्त होगा, मांगलिक कार्यों में विलंब होगा.

वृषभ- कार्य योजना बनाकर आगे बढ़ें, सफ्लता मिलेगी, शारीरिक कष्ट हो सकता है, राजकीय कार्यों में विलंब होगा, परिश्रम अधिक करना पड़ेगा.

मिथुन- काम करवाने के लिये भागदौड़ करना पड़ेगी, घरेलू वातावरण सुखद रहेगा, महिला जाति की सलाह उपयोगी रहेगी, लेखन, अध्ययन में रूचि रहेगी.

कर्क- आपका पूरा ध्यान परिवार की जरूरतें पूरा करने की ओर रहेगा, मानसिक प्रसन्नता रहेगी, विरोधी वर्ग उग्र रूप धारण कर सकता है, सावधानी पूर्वक कार्य करें.

सिंह- नये कार्य के लिये जरूरी धन की व्यवस्था पूरी होगी, विद्या के क्षेत्र में उन्नति होगी, कार्य पूर्ण होगा, नवीन योजनाओं का विकास होगा.

कन्या- मित्रों से किया वादा निभाने में मुश्किल होगी, परोपकार में खर्च होगा, साहस एवं पराक्रम में वृद्धि होगी, यश मिलेगा. नया काम बनेगा.

तुला- कार्य स्थल पर चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है, प्रापर्टी के कार्यों में सावधानी रखें, यदि टाल सकें तो ज्यादा अच्छा है, व्यर्थ की व्यस्तता रहेगी.

वृश्चिक- बुजुर्गों की मदद से पारिवारिक समस्या का समाधान होगा, खरीदी का कार्य बनेगा, विरोधी पक्षों के कारण कामकाज में बाधा होगी, नियमितता का ध्यान रखें.

धनु- धन की कमी से योजना खटाई में पड़ सकती है, वैभव विलासिता पर विशेष खर्च होगा, मन में प्रसन्नता रहेगी, शुभ सूचना मिलेगी, कामकाज में मन लगेगा.

मकर- जमीन संबंधी मामले पक्ष में हल होने की उम्मीद है, लाभकारी प्रस्ताव मिलेगें, खर्च में वृद्धि होगी, मांगलिक कार्यों में व्यस्तता रहेगी.

कुम्भ- सकारात्मक सोच और धैर्य से मुश्किल हालात पर काबू पा लेगें, आय के साधनों में वृद्धि होगी, वाद विवाद को टालें, दूर-दराज की यात्रा हो सकती है.

मीन- लोग भ्रमित कर धोखा दे सकते हैं, धार्मिक यात्रा होगी, राजकीय कार्य एवं नौकरी आदि के कार्यों में व्यस्तता रहेगी, यश सम्मान मिलेगा.

SUDOKU 7361

8	2			6			1	
	6		8	9			7	5
3			1					2
	3		4				6	
6		2		1		4		3
	8				5		2	
2				3				1
5	1			7	6		4	
	9			4			3	6

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7360

8	6	4	2	7	9	5	3	1
7	3	9	1	8	5	2	6	4
1	5	2	4	3	6	7	9	8
4	1	3	8	6	7	9	5	2
5	8	6	9	2	4	3	1	7
2	9	7	5	1	3	8	4	6
9	4	8	7	5	1	6	2	3
3	7	5	6	4	2	1	8	9
6	2	1	3	9	8	4	7	5